कबीर वाणी में अध्यात्म एंव संगीत

बनीता
शोधार्थी, संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला

भारत वर्ष एक धर्म क्षेत्र है जहां अनेक अवतार, अनेक संत महात्मा हुए हैं। यह देश देवी–देवतांओं की तपोभूमि है। देश में जितने भी संत हुए हैं उन सब में कबीर एक महान संत हुए हैं। कबीर का सच से साक्षात्कार हमारे लिए आज भी मूल्यवान है। कबीर सर्वोच्च जीवन मूल्यों के सच्चे कवि थे। ये उत्तर भारत की संत परंपरा में सर्वाधिक प्रतिष्ठित संत कवि एंव विचारक थे। कबीर की वाणी के कई रुप जैसे पद, शब्द, दोहे, रमैणी, साखी पाए गए हैं। कबीर के सब पद विभिन्न रागों में निबद्ध है तथा कई भजनों में सम्मिलित किए जाते है। ये पद निर्गुण ब्रह्मा की भक्ति पर आधारित है। साथ ही उन्होंने समय की कई कुरीतियों पर व्यंग्य किए तथा समाज में इन कुरितियों के प्रति चेतना जागृत की। कबीर की वाणी आज भी समाज में चेतना लाने में समर्थ है तथा अध्यात्म की प्रेरणा देती है।

भारत वर्ष एक धर्म क्षेत्र है जहां अनेक अवतार, अनेक संत महात्मा हुए हैं। यह देश देवी–देवताओं की तपोभूमि है। देश में जितने भी संत हुए हैं उन सब में कबीर एक महान संत हुए है। कबीर का सच से साक्षात्कर हमारे लिए आज भी मूल्यवान है। कबीर सर्वोच्च जीवन मूल्यों के सच्चे कवि थे। ये उत्तर भारत की संत परंपरा में सर्वाधिक प्रतिष्ठित संत कवि एंव विचारक थे। या यूं कहें कि समूची भारतीय संत परंपरा में कबीर का स्थान अपनी एक स्वतंत्र पहचान रखता है। इन्होने जीवन भर सत्य की राहपर चलकर असत्य से संघर्ष किया तथा समाज में फैली हर बुराई का डटकर सामना किया। कबीर एक सरल मनुष्य, ऊँचे सन्त तथा विकट आलोचक थे। विनय स्पष्टवादिता उनकी सरलता के प्रमुख अंग थे। कबीर जागरुक, चिन्तक और निष्पक्ष आलोचक थे। इसके अलावा उनका मानव प्रेम, दयालुता, ईमानदारी उनकी वाणी में सपष्ट दृष्टिगोचर होती है।

''डॉ. त्रिगुणायत के ये शब्द कबीर के व्यक्तित्व की झांकी प्रस्तुत करते हैं :–सत्य के उस अनन्य उपासक में श्रेष्ठ दार्शनिक, बुद्धिवादिता और चिन्ता, कट्टर क्रान्तिकारियों की क्रान्ति और कठोरता, अनन्य भक्त की विनम्रता और प्रमानुभूति, सच्चे साधु की आचरण प्रियता, आदर्श पुरुष की कर्तव्य–परायणता, योगियों की अक्खड़ता तथा पक्के फकीर की साधना थी।''1

कबीर आनासक्त योगी और ईश्वर भक्त थे। निरक्षर होते हुए भी उन्होंने उच्च कोटि के काव्य की रचना की तथा सामाजिक और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की। ''कबीर की जन्म तिथि तथा जन्म स्थान को लेकर विद्वानों के विभिन्न मत है कबीर के शिष्य धर्मदास के अनुसार

चौदह सौ पचपन साल गए
चन्द्रवार एक ठाठ ठए।
जेठ सुदी बरसायत को,
पूरनमासी तिथि प्रगट भये।।

इस छंद के अनुसार इनका जन्म 1455 ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा दिन सोमवार को हुआ।''[2]

जन्म स्थान को लेकर भी विद्वानों के विभिन्न मत है। एक मत के अनुसार कबीर का जन्म काशी की एक विधवा ब्राह्मणी से हुआ जो लोक लाज के कारण शिशु को लहतारा नामक तालाब की सीढ़ियों पर छोड़ गई। इस बालक का पालन पोषण नीरु नीमा नामक जुलाहा दम्पति ने किया। गुरु ग्रंथ साहब के राग गौड़ी के 15वें पद में कहा गया है, कबीरदास ने समूचा जीवन शिवपुरी काशी में बिताया तथा अपने अंतिम समय में मगहर आए

सगल जन्म शिवपुरी गंवईया।
मरती बार मगहर उठि आइया।

कबीर वाणी

आज कबीर की वाणी मुख्यतः तीन रुपों में मिलती है साखी, पद, रमैणी। इसके अतिरिक्त अन्य रुप भी है जैसे चौंतीस, बावनी, वार, चाचर बसंत, बेलि उलटवासियां आदि।

साखीः– साखी यानि साक्षी ऐसा व्यक्ति जिसने घटना को अपनी आंखो से देखा है। कबीर ने कहा कि साखी की रचना उन्होने रचना –कौशल दिखाने के लिए नहीं, वरन संसार की समस्याओं को सुलझाने हेतु की है। साखी में प्रायः जो भी उन्होंने प्रत्यक्ष देखा वही कहा इसमें प्रायः विभिन्न अंग है। गुरुदेव कौ अंग, विरह, रस, मन, माया, विचार, उपदेश, मोह, काल, दया, विनती आदि। गुरुदेव कौ अंग में गुरु की महिमा का वर्णन किया है।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविन्द दियौ मिलाय।।

पदः– कबीर वाणी के पद आध्यात्मिक बोध प्रधान है जबकि साखी सामाजिक बोध प्रधान पदों में उपदेश अधिक है। सभी पद रागों के अनुसार विभाजित किए गए है। जिसमें राग गौड़ी, रामकली, आसावरी, केदारी, तोड़ी, बिलावल, मारु, ललित, बसंत, मलार, धनाश्री का समावेश है। ये पद गेय है तथा प्रायः भजनों में सम्मिलित होते है।

रमैणीः– रमैणी कबीर के ईश्वर सम्बन्धी विचारों, शरीर–रचना तथा मानवीय आत्मा का उद्धार सम्बन्धी विचारों का संकलन है। रमैणी तत्कालीन रुढ़ियों ऐव धार्मिक प्रंपंचों का चित्रण है। रमैणी में राग सूहै, सतपदी, बड़ी अष्टपदी, दुपदी, अष्टपदी, चौपदी आदि रमैणी का प्रयोग हुआ है। छंदशास्त्र के आधार पर हम ये कह सकते हैं कि रमैणी में छंद का प्रयोग बहुत ही सुनयोजित रुप में हुआ है।

अध्यात्मः– भौतिक जीवन में संगीत मनोरंजन का साधन है वहीं अध्यात्म जीवन में प्रेरणा का स्त्रोत है। अध्यात्म भौतिकता से परे की अनुभूति है। आध्यात्मिक अनुभूति उसी व्यक्ति को होती है जो भौतिक स्तर से ऊंचा उठ जाता है। अध्यात्म का भौतिक साधन से कोई सम्बन्ध नहीं है।

''विलियम जेम्स के अनुसार अध्यात्मवाद उसे कहते है जो यह विश्वास दिलाता है कि जगत में एक शाश्वत नैतिक व्यवस्था है जिससे आशा मिलती है।

''हिन्दी शब्द सागर के अनुसार अध्यात्म के निम्न अर्थ है

अध्यात्मः– आत्मा से सम्बन्ध

अध्यात्मः– परमात्मा, ईश्वर

अध्यात्मः– ब्रह्मा–विचार, ज्ञानतत्व, आत्मज्ञान, परमात्मा आत्मा।''[1]

''अध्यात्मिक काव्य सृष्टि करने में वही कवि समर्थ हो सकता है जो मूलतः साधक हो और जिसका मन भागवती आभा से ओत–प्रोत हो कबीर अध्यात्मिकता के अपूर्व और विलक्षण साधक थे।'' डॉ. चौहान के अनुसार ''इस कवि का मन अध्यात्म के सर्वोच्च शिखर पर सदैव प्रतिष्ठित रहता था। वह संसार में कभी उतरा ही नहीं। उतरने पर भी बहुत देर तक स्थिर नही रह सका। इस कारण संसार और सांसारिकताके सम्बन्ध में उन्होंने अपने काव्य में जो कहा उसमें भी अध्यात्मिक स्वर विशेष रुप से मुखर है।''[2]

कबीर ने लोगों को राम नाम को जीवन में उतारने का पाठ दिया वे राम नाम की महिमा का बखान करते हुए कहते है

निर्गुण राम जपहु रे भाई, अविगत की गति लखि न जाई।
चारिवेद जाकै सुकुत पुराना, नौ व्याकरण परम न जाना।।

अविगति की गति लिखना सही नहीं है। वेद, पुराण, स्मृति और व्याकरण शेष गरुड़ और कमल भी जिसे नही जान सके उसका ज्ञान प्राप्त करना सहज नही है।

व्यापक ब्रह्मा सबनी मैं एक, को पंडित को जोगी।
रावण–राव कबन सूं कहिए, कवन वैद को रोगी।।

ब्रह्मा व्यापक है। सब जीवों में वह एक भाव से व्याप्त है। पंडित, योगी, राजा, प्रजा, वैद्य हो या रोगी वह सब में आप रम जाता है। सबमें वो अंश एक भाव से समाया हुआ है।

''कबीर की साधना 'सहजयोग' से प्रभावित थी। उसकी मान्यता थी कि सहज योग से भगवद प्राप्ति, आत्म साक्षात्कार आदि सुलभ है। इस सहज समाधि की उपलब्धि के द्वारा फिर मन को अन्य विषयों में लिप्त होने की गुंजाइश नही रह जाती।''[3]

कबीर की जीवन दर्शन के संबन्ध में मान्यता है कि ''अर्न्तज्योति वह शक्ति है जो अपने ब्रह्मा रुप में अन्तर में छुपी हुई सता है जिसके द्वारा सारे ब्रह्माण्ड संचालित होते है।''

''सहजयोग भक्ति का सीधा मार्ग है, जिसमें भक्ति की प्रधानता है। भक्ति की प्रगाढ़ता के कारण यह योग सहज हो जाता है और इस स्थिति में खाना पीना, चलना हंसना, बोलना सब योग बन जाता है क्योंकि भक्ति के कारण भावना निरन्तर भगवान की बनी रहती है।

''भगवान की भक्ति में सरोबर रहने के कारण आगे चलकर तो स्थिति ऐसी हो जाती है कि प्रत्येक समय शब्द की झनकार अपने अन्दर होती रहती है, जिसमें मन बिल्कुल स्वच्छ हो जाता है और उन्मुनि अवस्था अर्थात भक्ति विभोर की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जो परम आन्नदमय है।

कबीर दास की साधना का आधार सहज– साधना के अन्तर्गत सुरति शब्द योग है। संत मत में प्रवेश करने की सबसे पहली शर्त है कि आप 'दीन' बने, निरभिमान बने क्योंकि बिना निरभिमान हुए द्वैत

भावना से मुक्ति नही मिल सकती और द्वैत छूटे अपने स्वरुप का साक्षात्कार नही हो सकता। कबीर सुरति शब्द के ज्ञाता, अनुभवी साधक और पूर्ण ज्ञान प्राप्त योगी थे। सुरति का अर्थ अर्न्तमुखी वृति से है। मन की गति परिधोन्मुखी है। इस हेतु वह विषयों में संलग्न रहता है। यही संसार का सार तत्व है। इन्द्रिय विषयों में लिप्त होने के कारण उस शाश्वत आनंद को प्राप्त नही कर पाता जो उसका चिर अभिष्ट है।''[1] कबीर जी ने कहा है कि जब हमारी सुरति उस परम पिता परमात्मा से लग जाती है तो मन में एक तृप्ति का भाव बना रहता है।

''सुरत निरत सो मेल करके,
अनहद नाद बजावै
कहै कबीर सुनो हो साधु
ज्यों की त्यौं ठहरावै।।

सहज भाव से ध्यान में स्थिर होकर बैठने पर प्रभु की तरफ ध्यान लगाने पर अनहद नाद की ध्वनि सुनाई देने लगती है। बस अपने मन की वृतियों को स्थिर करने की आवश्यकता है।

जो दीखै सो तो है नाही,
है सो कहा ना जाई।
बिन देखे परतीत न आवै,
कहै न को पतियाना।
वह राग तो लिखा न जाई,
मात लगे ना काना।
कहै कबीर सो पढ़ै न परलय,
सुरत निरत जिन जाना।।

जो कुछ दिखाई पड़ता है उसका कोई मूल्य नही है सब अस्थाई है जो परमतत्व वास्तविक है उसका दो शब्दों द्वारा वर्णन नही हो सकता, जिसने इसे खुद अनुभव न किया तो विश्वास भी नही हो सकत। जो मनुष्य 'सुरत–मिरत' का ज्ञान रखता है वही इस रहस्य को समझ पाता है।

हम वासी उस देश के, जंहा बारहा मास विलास
प्रेम डारे विकसै कंवल, तेजपूंज परकास

कबीरदास कहते है कि मेरा निवास प्रभु का घर है जंहा आनंद ही आनंद है वंहा खूब तेज प्रकाश है आकर्षक एंव प्रेमपूर्ण वातावरण है।''[2]

सांसारिक विषय विकारों से ये आनंद प्राप्त नही होता क्योंकि हम इस परम ज्ञान को इनकी वजह से प्राप्त ही नही कर पाते।

''तू सूरत नैन विहार, वह अंड में सारा है।
तू हृदय सोच विचार, यह देश हमारा है।।''

कबीर कहते है कि आंखे बन्द करके ध्यान लगाओ ये सारा संसार हमारा है। ठीक से सोच विचार कर लो यही प्रभु का धाम है सुख शान्ति का द्वार है।''[1]

कबीर कहते है कि योगी जिस चीज को योग से नही पाता, तपस्वी तपस्या से नही पाता उसी चीज को ध्यान से पाया जा सकता है। कबीर का मानना है कि मनुष्य प्रयत्न न करने से अंधकार में डूबा रहता है। परन्तु थोड़े से प्रयत्न करने से इन अंधकार रुपी कष्टों से निकला जा सकता है।

''जहां करम की कुछ नाहि, वह कबीर हम जाना
हमारी सैन लखै जो कोई, पावे पद निखाना।

कबीर अपने अनुभव के आधार पर उद्घोष करते हैं कि मेरी बात मानोगे तो निश्चित रुप से निर्वाण पा लेंगे अर्थात जन्म–मरण के बंधन से मुक्त हो जाओगे।''[2]

कबीर कहते है कि परम सुख की अनुभूति तभी होगी जब अपने तन को छोड़कर अपने मन को प्रभु के रंग में रंग दोगे। वे कहते है कि साधु माला पहनकर, तिलक लगाकर, सिर मुंडाकर भक्त नहीं बन सकता। ऐसे लोग दुनियादारी के दिखावे में जन्म व्यर्थ गंवा देते है। उनका कहना है कि

मूँड मुँडाये हरि मिलैं, सब कोई लेहि मुंडाय।
बार–बार के मूँडने, भेड़ बैकुंठ न जाय।।

अगर सर मुँडाने से परमात्मा मिलते है तो भेड़ परम–पद प्राप्त क्यों नही करती।

''कबीर के ये सारे आग्रह मनुष्य, जीवन और जगत् को को संवारने के रहे है। उनकी सारी सोच और चिन्ताओं का केन्द्र जीव रहा है। जीवों में श्रेष्ठ मनुष्य का अन्य जीव जन्तुओं के प्रति बड़ा कर्तव्य है। उनका रास्ता कर्म सच्चरित्रता, नैतिकता, संवेदनशीलता का है। इस धरती पर चेतना का सारा प्रसार पत्थर, पेड़, पशु, पक्षी, मनुष्य तक का विकास कबीर के लिए राम है। धड़कन ही राम है जंहा यह धड़कन नही वंहा विराम है। कबीर इन अर्थों में जीव, जीवन और अध्यात्म के गायक है। समूचा ब्रह्माण्ड उनके लिए राममय है। कबीर निर्गुण और सगुण दानों को मानते है। परन्तु युग की मुर्खताओं को निरन्तर करने के लिए निर्गुण पर अधिक बल देते है और राम को ही रहीम सिद्ध करते है। कबीर ने अध्यात्मिकता की संप्रदायगत संकुचित ब्रह्माचारी पूजा विधियों की तरहा प्रचारित नही किया बल्कि सामप्रदायिक कुहासों को छांटने का काम किया। उन्होने अध्यात्म को भी समजिक मूल्य बनाकर प्रस्तुत किया तथा धर्म दर्शन के द्वैत की खाई को पार कर हिन्दु–मुस्लमान दोनो को आत्म अध्यात्म के एक मूल सूत्र में जोड़ने का काम किया।''[3]

कबीर वाणी में संगीत

''कबीर वाणी में धर्म, दर्शन, राजनीति, साहित्य, समाज के साथ साथ संगीत तत्व का भी महत्वपूर्ण अंश है। कबीर वाणी में संगीत का प्रमाण प्रायः उनके प्रमाणिक ग्रंथो में मिलता है। कबीर ग्रंथावली में पदों का वर्गीकरण क्रमशः राग गौड़ी, रामकली, आसावरी, सौरठी, केदारौ, मारु, तोड़ी, भैरु, बिलावल, ललित, बसंत, माली गौड़ी, कल्याण, सारंग, मलार, धनाश्री के अनुसार किया गया है। गुरुग्रन्थ के अन्तर्गत

उनके पद क्रमशः रागु सिरी, गउड़ी, आसा, गुजरी, सोरठि, धनासरी, तिलंग, सूही, बिलावलु, गौड़, रामकली, मारु, केदारा, भैरउ, बसंत प्रभातीके अनुसार विभाजित है। जोहनी के संगीतज्ञ श्री कृष्णानंद ब्यास ने अपने सं0 1951 में समाप्त 'राग कल्पद्रुम' नामक प्रसिद्ध बृहद ग्रंथ के अन्तर्गत कबीर बीजक के सभी शब्दों का रागानुसार वर्गीकरण किया है। उन्हे क्रमशः रागिनी आसावरी ताल तितार, धनाश्री, तितारा, जंगला, पूरबी, गौरी, भूपाली, कलिंगड़ा, सुरठ, हिंडोला, धनाश्री, तितारा जैसे शीर्षकों में स्थान दिया है।''[1]

सम्पूर्ण कबीर वाणी छंदो में बंधी हुई है। सम्पूर्ण वाणी में छंदो का प्रयोग कुशलतापूर्वक किया गया है। कबीर के पदों को भजनों में शामिल किया गया है तथा ये पद भक्ति भाव के कारण आत्म ज्ञान की चेतना से रचे गए थे। इनमें गेयतत्व का गुण था।

पद गाएं मन हरषिया, साषी कीहया आनंद।।

यानि कबीर ने भी परमात्मा या ईश्वर से मिलने के लिए पदों को गाया जिससे उन्हें आनंद की अनुभूति हुई। आज भी कबीर भजनों को गाया जाता है तथा आज भी ये दोहे मनुष्य में आध्यात्मिक चेतना लाने में सहायक है।

पदों की रचनाएं रागों के आधार पर करने की भारतीय परंपरा अति प्राचीन है। अतः संत कबीर की रचनाएं भी राग के आधार पर होना परम्परागत काव्य रचना शैली थी।

कबीर की रचनाओं में उनका संगीत प्रेम अनेक प्रसंग एंव प्रयोगों के काव्य वर्णन से स्वतः सिद्ध है। टेक एंव ध्रुव गेय पदों की विशेषता है। कबीर के समय तक टेकों तथा ध्रुवों के साथ, पदो के साथ पद रचनाओं की प्रणाली निर्धारित हो गई थी। यही कारण है कि कबीर के पदों के संग्रहकर्ताओं द्वारा उनके पदो के राग भी निश्चित कर दिए गए। एक ही पद कई रागों में गाया जा सकता है। इस कारण कबीर के पद विभिन्न रागों में वर्गीकृत किए गए है। कबीर के पद रागों के अनुसार गेय होने के कारण उनकी संगीत रचना का ज्ञान उन्हे अवश्य रहा है।

''कबीर साहब ने अपने पदों की रचना 'गीत' कहकर भी की है। इस प्रकार के गीत में कई प्रसंगों की उपस्थिति उनके संगीतानुराग को प्रमाणित करती है।

तुम्ह जिनि जानौ गीत है, यहु निज ब्रह्मा विचार।

कई पदों में टेक का प्रयोग कर संगीत का स्वतः ही प्रमाण मिलता है।

निरमल निरमल राम गुण गावे, सो भगता मेरे मनि भावे।।टेक।।
राजा राम अनहद किंगुरी बाजै, जाकी दिसहि नाद लिव लागै।।

सिरी रागु के इस पद में अनहद किंगुरी का उल्लेख कर उसके बनजे पर सुरति नाद में लौ लग जाने का वर्णन किया है।

कबीर की रचनाओं में ढोल, तूरस, दमांमां, बंसी, रबाब तथा शहनाई आदि वाद्य यंत्रो का उल्लेख मिलता है। यंत्र संबंधी व्यापक ज्ञान मिलता है। चन्द्रमा तथा सूर्य की नाड़ियों के दो तुंबे जोड़कर चेतन की

डांडी सजाकर सुषुमना की तांत को झंकृत कर सहज योग में प्राप्त करने का वर्णन कबीर के वाद्य यंत्र की रचना संबधी सूक्ष्म ज्ञान का परिचायक है।

''चंद सूर दोई तूंबा करिहूं, चित्र चेतन की डांडी।
सुषमन तांती बांजण लागी, इति विधि तृष्णा खांडी।।

साथ ही कबीर जी ने कहा है कि रबाब की तारों के टूट जाने पर उसे नही बजाया जा सकता है। इस प्रसंग में शरिर को जंतु का स्वरुप देकर कहा है कि बजाने वाले के बिना वह बेकार ही जाता है।

टुटी तंतु न बजै रबाबु।
जंतु बिचारा किया करै, चलै वजावनहार।।

इन सभी प्रसंगों के आधार पर सिद्व होता है कि कबीर जी को संगीत के सभी प्रमुख तत्व, वाद्य यंत्र, राग आदि का समुचित ज्ञान था।''[1]

संगीत और आध्यात्मिकता, यह एक दूसरे से जुड़े है। वैदिक काल से ही संगीत में पवित्रता लाने हेतु इसे धर्म के साथ जोड़ दिया गया। संगीत हमारी भावनाओं को ईश्वर तक पंहुचाने का एकमात्र साधन है। संगीत एंव धर्म को एक साथ जोड़ने के लिए संगीत में आध्यात्मिकता का समावेश हुआ। देवतांओं को प्रसन्न करने हेतु संगीतमयी स्तुति एंव प्रार्थना एकमात्र साधन बन गया। जिस तरह सम्पूर्ण जगत के कण कण में ईश्वर का वास है वैसे ही हमारी पूरी सृष्टि संगीतमय है। मेघों का गर्जन, सागर की लहरों का गर्जन, निर्झर झरनों की झर झर वन उपवनों में विहंगों की कलरव ध्वनि सबमें संगीत है। संगीत के द्वारा अध्यात्म या यूँ कहे आत्मा का परमात्मता से मिलन संभव है। संगीत को अध्यात्म तक पंहुचाने व उसके साक्षत्कार का सर्वश्रेष्ठ मार्ग माना है।

अध्यात्म प्राप्ति के लिए संगीत एंव संगीत में भक्ति काव्य का विशेष स्थान है। भक्ति कवियों ने अपने जीवन के अनुभवों को काव्य का रुप दिया जो आज भी मनुष्य में आध्यात्मिक चेतना जागृत करने में सहायक है। इन संतो तथा कवियों की वाणियां आज भी समाज की कुरितियों को दूर करने एंव समाज में चेतना लाने हेतु समर्थ है। कबीर वाणी का प्रचार और प्रसार आधुनिक युग के लिए आवश्यक प्रतीत होता है। आज के संत भी इसी की उद्घोषणा करते है। राष्ट्रों के बीच संघर्ष, नैतिकता का ह्रास और अन्य समस्यांए संसार के सामने खड़ी है। इनका समाधान लोगों को आत्म साक्षात्कार की ओर प्रेरित करके किया जा सकता है।

अध्यात्म वह मूल आधार है जिसके द्वारा समूचे विश्व में पुनः परिवर्तन और क्रान्ति घटित हो सकती है। आधुनिक समाज में राजनिति निरंकुश, स्वार्थी, अनैतिक और भ्रष्ट होती जा रही है। हिन्दू, मुस्लमान तथा अन्य वर्गों को वोटों की राजनिति के लिए उन्हें धर्म जाति के आधार पर बांटा जा रहा है। कबीर ऐसी अराजक, अमानवीय प्रवृतियों पर जन समाज को सजग करके अंकुश लगाने को प्रेरित करते है।

सन्दर्भ

1. सरनाम सिंह शर्मा, कबीरः व्यक्तित्व, कृतित्वएंव सिद्धान्त, पृ0 सं0–97
2. डॉ. वी. डी. विज, मध्यकालीन काव्य, पृ0 सं0–58
3. सं0 श्यामसुन्दर, हिन्दी शब्द सागर, प्रथम भाग, पृ0 सं0–17

4. डॉ. प्रताप सिंह चौहान, कबीर साधना और साहित्य, पृ0 सं0–328
5. डॉ. प्रताप सिंह चौहान, कबीर साधना और साहित्य, पृ0 सं0–238
6. श्रीमति सुशीला सिन्हा, लौह पुरुष कबीर, पृ0 सं0–148–149
7. श्रीमति सुशीला सिन्हा, लौह पुरुष कबीर, पृ0 सं0–151
8. श्रीमति सुशीला सिन्हा, लौह पुरुष कबीर, पृ0 सं0–152
9. श्रीमति सुशीला सिन्हा, लौह पुरुष कबीर, पृ0 सं0–153
10. डॉ. राजेन्द्र टोकी, कबीर दृष्टि–प्रतिदृष्टि, पृ0 सं0–27–28
11. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, कबीर साहित्य की परख, पृ0 सं0–280
12. डॉ. राजेन्द्र टोकी, कबीर दृष्टि–प्रतिदृष्टि, पृ0 सं0–165–166

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

चतुर्वेदी, आचार्य परशुराम, कबीर साहित्य की परख, भारती भंडार, लीडर प्रैस इलाहाबाद।
टोकी, डॉ. राजेन्द्र, कबीर दृष्टि–प्रतिदृष्टि, विमला बुक्स सोनिया बिहार दिल्ली–94।
सिन्हा, श्रीमति सुशीला, लौह पुरुष कबीर, संजय प्रकाशन ए–2/703 प्रगति विहार सोम बाज़ार दिल्ली–53।
शर्मा, सरनाम सिंह, कबीरः व्यक्तित्व,कृतित्व एंव सिद्धान्त, कल्पना प्रकाशन बी–1770 जंहागीर पुरी दिल्ली
विज, डॉ. बी.डी.,मध्यकालीन काव्य, लक्ष्मी बुक डिपो हांसी गेट भिवानी हरियाणा।